वैसाख सुदी ३

आखा तीज

(वीरबाई जी - आधार शक्ति जी को प्राकट्य उत्सव)

श्री वीरबाई जी

आपका प्रागट्य गुजरात प्रदेश में धायता गांव, जिला वागलाण तालुका में वैशाख सुदी तीज को हुआ था । आपका प्रागट्य आधार शक्ति जी का है । आप में अप्रतिम शक्ति थी जैसा आपका नाम है उसी सार्थकता का एक प्रसंग यहां दिया जा रहा है । आप श्री गोकुल में सम्वत् १६८५ में सपरिवार आकर के बसे एवं श्रीजी की सेवा में पूरा जीवन व्यतीत किया । जिस समय आप गोकुल में आये थे उस समय श्रीजी की वय ७७ वर्ष की थी आपने श्रीजी की सेवा बहुत ही वात्सल्य पूर्वक की । उसी समय का प्रसंग है एक समय श्रीजी पलंग पर विराज रहे थे बहू जी एवं बालक सभी ही वहां मौजूद थे वार्ता प्रकार चल रहा था इतने में एक सर्प को देखकर बहूजी व बालक सभी डर कर दूसरे स्थल पर चलें गए और श्रीजी अकेले निर्भय होकर विराजे रहे, उसी समय वहां पर बैठी हुई वीर वाई जी ने एक बड़ा दीपक लेकर उस सर्प को खोजा जो कि श्रीजी के पलंग के एक पाया ऊपर लपटा हुआ था । सर्प को देखकर श्रीवाई जी जरा भी विचलित नहीं हुई और स्वामी के वात्सल्य का विचार करते हुए उसी दीपक से ही उस सर्प का काम तमाम करके उसका अग्नि दाह भी कर दिया, यह आपके नाम की सार्थकता का एक प्रसंग है । श्रीजी की विषम परिस्थिति देखकर वीरवाई जी हमेशा क्लेश में भरी रहतीं थी किसी वैष्णव ने श्रीजी के सन्मुख उनकी दूषण की बात बताई तब आप श्री ने आज्ञा करी कि यह वीरवाई जी का दूषण नहीं है बल्कि उनका भूषण है ।

श्रीजी ने ८९ वर्ष की अवस्था में भूतल से निजधाम पधारने के लिये विचार किया तब श्रीजी ने सम्वत् १६९७ आश्विन सुदी १३ के रोज वीरबाई जी को स्वप्न में यह कहलाया कि व्रजसुन्दरियों के जूथ में जाना है आपकी क्या देर है, श्रीनाथजी के मन्दिर में मंजूष के पास बैठ कर श्री वीरबाई जी को बुला रहे हैं । ऐसा जानकर वीरबाई जी ने विनती करी कि हमारी कोई ढील नहीं है आना है । श्रीजी ने आज्ञा करी कि ग्रीवा सूत्र पहेरना, चूड़ी नहीं पहेरना, गोविन्द कुंड में स्नान करके आना श्री वीरवाई जी ने जवाव दिया कि गोविन्द कुंड में नहीं नहाना है तब श्रीजी ने गोपी तलावडी में स्नान की आज्ञा करी ।

पीछे केसरी वस्त्र चोली वगैरह पहिनकर श्रीजी के सन्मुख होने को गई तभी आपकी आँख खुल गई ।

सम्वत् १६९७ में श्रीजी ने श्रीगोकुल सुख धाम के लिये विजय किया । तभी से वीरबाई जी खूब विकल रहने लगी और श्री बैठक जी में बैठ कर श्रीजी के स्वरू प का गुणगान करने लगी ।

एक समय श्रीजी मन्दिर में पधार रहे थे बधाई आई सर्व वैष्णव जन दौड़कर दर्शन करने गये परन्तु किसी को श्री दर्शन नहीं हुए केवल वीरवाई जी ही अंग अंग में प्रफुल्लितता को प्राप्त करके कहने लगी कि जिस प्रकार सिंह की गर्जना सुनकर हिरणी दुख पाती है अनुसंधान भूल जाती है उसी प्रकार आपके लीला में पधारने से मेरी भी हिरणी जैसी दशा हो गई है ।

वीरवाई जी ने अपने एक धौल में कहा है कि मैं दर्शन के लिये तड़फती थी तब श्रीजी मुझे दर्शन देकर मेरे विरह दुख को दूर करते थे । परन्तु आपके दर्शन की इतनी भावना रहती थी कि मैं वाट में रोती रोती जाती थी आँख में अश्रु धारा बहती थी और मैं पोंछती पोंछती मन में कहती थी कि "व्हेनी त्यां जईये रे ? ज्यहां श्री विट्ठल राजकुमार" । आनन्द हर्षवेश में बह गाती रहती थी :-

आपकी सहन शीलता के वारे में एक प्रसंग है कुछ वैष्णवों की ना समझी से उनकी लोटी कदर करदी गई परन्तु वीरवाई जी ने उन वैष्णवों के प्रति कोई द्वेष भाव नहीं रखा और सहन करती रही । जब श्रीजी कूं या बात की खबर पड़ी तभी से आपकी लोटी फिर चालू की गई ।

इसके बाद आपने सहगमन किया उसका प्रसंग काफी लम्बा है इसलिए नहीं दे रहे केवल अणुमात्र ही लिखा है । जैसा आपका नाम है वैसा ही आपका चरित्र एवं लीला भी हैं अतः उन्हीं का प्रागट्य दिवस है हमें बड़ी धूमधाम से मनाना चाहिए ।

आखा तीज श्री वीरबाई जी का उत्सव वैसाख सुदी तीज

१. केसर स्नान –
केसर स्नान गुप्त होय है । चन्दन और केसर के जल से।

२. वस्त्र –
वस्त्र चन्दन के छापे के स्वेत मलमल के ।

३. श्रृंगार
श्रृंगार मोती को मन भावतो ।

४. राजभोग –
सामग्री, राजभोग में शीतल सामग्री, विशेषकर सत्तू के लड्डू चिरोंजी को पाक और मूंग व चना की दाल भीगी, मिश्री को पना, खरबूजे को पना, केरी को पना जो बने सो व प्रकारानुसार ।

५. तिलक आरती –
तिलक आरती होय है । आरती चार वाती की होय है । चन्दन घिसकर केसर कपूर मिलाकर तिलक होय है । चन्दन की वेंदी भी आवें है ।

आज सूं श्री ठाकुरजी के आगे फुहारा आवे है खस की टटिया आवे, यह प्रकार आसाढ़ सुदी १४ तक रहे है जो वर्षा वोहोत होय तो यह प्रकार रथ यात्रा सूं बंद होय जाय है और जोड़ तो दशहरा तांई धरें । आज सूं ही माटी को कुंजा आवें है ।

तिलक आरती व केसर स्नान इच्छानुसार होय है कोई कोई वैष्णव दोनों प्रकार करे है कोई नहीं करे है।

गुलाव जल को छिड़काव करनो ।

पुरातन रीति अनुसार खस को पंखा आवे है ।